A Vigilance Cell under the charge of Director (Vig.) working in the District makes prompt enquires about complaints of corruption etc.

Statement

	Divisional Engineer Out-door	Divisional Engineer (Indoor)	S.D. Phones	Asstt. Engineer Tech.
Idgah Exchange	Shri P.S. Sethi (17-11-1979)		(i) Shri Y.P. Kataria (16-8-78)	—
			(ii) Shri Y.P. Baluja (4-8-79)	—
Delhi Gate Exchange	Shri G. C. Sidana (30-6-79)	Sari Prakash (30-10-78)	(i) Shri Ishwari Lal (2-7-80)	(i) Shri G. B. S. Saini. (23-5-80)
			(ii) Shri S.N. Vohra (18-7-79)	(ii) Shri Avtar Singh (25-2-78)
Tis Hazari Exchange	Shri Kesho Ram (4-7-79)	Shri B.L. Sethi (29-6-79)	(i) Shri S.K. Gandhi (26-11-79)	(i) Shri Rajinder Singh (21-7-79)
			(ii) Shri Ravi Parkash (18-7-79)	
Karol Bagh Exchange	Shri S.K. Ghose (18-7-79)	Shri N.D. Grover (19-7-79)	(i) Shri Jai Prakash (19-11-79)	(i) Shri H.S. Dua (1-6-78)
			(ii) Shri T.S. Arora (27-2-79)	

मोटे अनाज आदि को सफेद कीड़ों से बचाने के लिये नई दवाई

5060. **श्री कृष्ण राम आर्य :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मोटे अनाज मोठ और मूंगफली के पौधों को नुकसान पहुंचाने वाले सफेद कीड़े को नष्ट करने के लिए किसी नई दवाई का निर्माण किया गया है ;

(ख) यदि हां, तो उसका नाम क्या है और वह कहां उपलब्ध है ;

(ग) क्या सरकार इस दवाई से इन कीड़ों को नष्ट करने का दायित्व लेती है ;

(घ) इस बारे में घोषणा न किए जाने के क्या कारण हैं ; और

(ङ) यदि नहीं, तो फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले इस कीड़े को नष्ट करने के लिए किसानों को किससे सम्पर्क करना चाहिए ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री० आर० वी० स्वामीनाथन) : (क) तथा (ख). पांच से भी अधिक किस्म के ऐसे कीड़े हैं जो मोटे अनाज, मूंगफली तथा मोठ के पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं । इनका लार्वा सफेद अथवा दुधिया रंग का होता है । उन कीड़ों का ब्यौरा जिनका लार्वा आदि सफेद रंग का होता है तथा जो इन फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं, उनके नियंत्रण के लिये किये जाने वाले उपायों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

फसल	कीड़े	सिफारिश की गई कीट-नाशी औषधियां
1	2	3
ज्वार, बाजरा, मक्का तथा मोटा अनाज	स्टमबोरर	कांटेक्ट इंसेक्टीसाइडस बी० एच० सी० 10 प्रतिशत तथा कारबेरिल 10 प्रतिशत चूर्ण एंडोसल्फान 35 प्रतिशत ई० सी० तथा क्विनलफोस 25 प्रतिशत ई० सी०

(1)	(2)	(3)
		सिस्टेमिक
		फासफेमिडन 85 प्रतिशत डब्ल्यू एस सी तथा फारेट 10 प्रतिशत ग्रेनुल्स ।
	बहाइटबोरर	डी० डी० टी० 5 प्रतिशत अथवा 10 प्रतिशत चूर्ण, कारबेरिल 10 प्रतिशत चूर्ण तथा डाइजिनन 5 प्रतिशत ग्रेनुअल ।
	स्टेम फ्लाई मेगट	फासफेमिडन 85 प्रतिशत डब्ल्यू एस सी तथा फारेट 10 प्रतिशत ग्रेनुअल ।
	मिज फ्लाई	कारबेरिल 10 प्रतिशत तथा बी० एच० सी० 10 प्रतिशत चूर्ण अथवा 50 : 50 के अनुपात में मिश्रण ।
	वेविंग कैटरपिलर	बी० एच० सी० 10 प्रतिशत अथवा कारबेरिल 10 प्रतिशत चूर्ण तथा मेलाथियन 50 प्रतिशत ई० सी० ।
ज्वार, बाजरा, दालें तथा मूंगफली	वाइटग्रब (यह बहु-भोजी कीड़ा है)	बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में फोरेट 10 प्रतिशत ग्रेनुअल तथा उन स्थानों पर जहां इसका प्रकोप कम है बी० एच० सी० 10 प्रतिशत चूर्ण अथवा क्लोरडेन 5 प्रतिशत अथवा अल्ड्रिन 5 प्रतिशत चूर्ण से उपचार किया जाता है ।
मूंगफली	स्टेमबोरर	25 प्रतिशत डी० डी० टी० का छिड़काव अथवा बी० एच० सी० 10 प्रतिशत चूर्ण को बुरकना । ये सभी कीटनाशी औषधियां देश में ही उपलब्ध हैं । इनके वितरण के निम्नलिखित तीन स्रोत हैं :—
		(1) राज्य सरकार द्वारा चलाए गए डिपो
		(2) कृषि उद्योग निगम/सहकारी विपणन संघ के फुटकर बिक्री केन्द्र तथा
		(3) प्राइवेट व्यापारियों द्वारा चलाई गई दुकानें ।

(ग) राज्यों के कृषि विभाग आवश्यकता पड़ने पर कीट नियंत्रण अभियानों की व्यवस्था करते हैं । इसके अलावा कीटों तथा कृषि महत्व के रोगों (जिनमें महामारी के क्षेत्रों में खर-पतवार नियंत्रण भी शामिल हैं) के नियंत्रण तथा उन्मूलन की केन्द्रीय प्रायोजित योजना के तहत केन्द्रीय सरकार कीटनाशी औषधियों की लागत के संबंध में और विशेषतया ज्वार के मिज फ्लाई तथा वाइट ग्रब के नियंत्रण के सम्बन्ध में राजसहायता प्रदान करती है ।

(घ) केन्द्रीय प्रायोजित योजना एक लगातार चलने वाली योजना है तथा राज्य इस योजना के तहत दी जाने वाली सहायता से भली-भांति परिचित है ।

(ङ) कृषि संबंधी स्थानीय विस्तार स्टाफ (ग्राम स्तर के कार्यकर्ताओं तथा खण्ड कृषि अधिकारियों) से सम्पर्क स्थापित किया जाना चाहिए ।